

## ३. वाह रे ! हमदर्द

-घनश्याम अग्रवाल

उस दिन जब मैं पूँजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्था पर भाषण सुनकर आ रहा था तो सामने से एक कार आ रही थी। भाषण के प्रभाव से मेरी साइकिल को अधिक जोश आया या कार को गुस्सा अधिक आया, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता; किंतु मेरी साइकिल और वह कार जब करीब आए तो विरोधियों की तरह एक-दूसरे को घृणा की नजरों से देखते हुए आपस में जा भिड़े। मैंने खामखाह पूँजीवाद और समाजवाद के झगड़े में टाँग अड़ाई। फलस्वरूप मेरी टाँग टूट गई। दुर्घटना के बाद आज भी इनसानियत कायम है, यह सिद्ध करने के लिए कुछ लोग मेरी तरफ दौड़े।

आँख खुली तो मैंने अपने-आपको एक बिस्तर पर पाया। इर्द-गिर्द कुछ परिचित-अपरिचित चेहरे खड़े थे। आँख खुलते ही उनके चेहरों पर उत्सुकता की लहर दौड़ गई। मैंने कराहते हुए पूछा-“मैं कहाँ हूँ?”

“आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं। आपका ऐक्सिडेंट हो गया था। सिर्फ पैर का फ्रैक्चर हुआ है। अब घबराने की कोई बात नहीं।” एक चेहरा इतनी तेजी से जवाब देता है, लगता है मेरे होश आने तक वह इसीलिए रुका रहा। अब मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ। मेरी एक टाँग अपनी जगह पर सही-सलामत थी और दूसरी टाँग रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटक रही थी। मेरे दिमाग में एक नये मुहावरे का जन्म हुआ। ‘टाँग का टूटना’ यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना। सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा। अस्पताल वैसे ही एक खतरनाक शब्द होता है, फिर यदि उसके साथ सार्वजनिक शब्द चिपका हो तो समझो आत्मा से परमात्मा के मिलन होने का समय आ गया। अब मुझे यूँ लगा कि मेरी टाँग टूटना मात्र एक घटना है और सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना दुर्घटना।

टाँग से ज्यादा फिक्र मुझे उन लोगों की हुई जो हमदर्दी जताने मुझसे मिलने आएँगे। ये मिलने-जुलने वाले कई बार इतने अधिक आते हैं और कभी-कभी इतना परेशान करते हैं कि मरीज का आराम हराम हो जाता है, जिसकी मरीज को खास जरूरत होती है। जनरल वार्ड का तो एक नियम होता है कि आप मरीज को एक निश्चित समय पर आकर ही तकलीफ दे सकते हैं किंतु प्राइवेट वार्ड, यह तो एक खुला निमंत्रण है कि “हे मेरे

### परिचय

**जन्म :** १९४२, अकोला (महाराष्ट्र)

**परिचय :** घनश्याम अग्रवाल जी की रुचि अध्ययनकाल से ही लेखन में विकसित हुई। अपने आस-पास की प्रत्येक स्थिति या घटना में हास्य ढूँढ़कर उसे धारदार व्यंग्य में ढालना आपके लेखन की विशेषता है। आप अखिल भारतीय मंचों पर हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में लोकप्रिय हैं।

**प्रमुख कृतियाँ :** ‘हँसीघर के आईने’ (हास्य-व्यंग्य), ‘आजादी की दुम,’ ‘आई एम सॉरी’ (हास्य कविता संग्रह) ‘अपने-अपने सपने’ (लघुकथा संग्रह) आदि।

### गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में लेखक ने दुर्घटना के माध्यम से विनोद को बड़े ही रोचक ढंग से व्यक्त किया है। हमदर्दी भी कभी-कभी किस तरह पीड़ादायी बन जाती है, यह बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया है।

परिचितो, रिश्तेदारो, मित्रो ! आओ, जब जी चाहे आओ, चाहे जितनी देर रुको, समय का कोई बंधन नहीं । अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है ।” बदले का बदला और हमदर्दी की हमदर्दी । मिलने वालों का खयाल आते ही मुझे लगा मेरी दूसरी टाँग भी टूट गई ।

मुझसे मिलने के लिए सबसे पहले वे लोग आए जिनकी टाँग या कुछ और टूटने पर मैं कभी उनसे मिलने गया था, मानो वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे और कब वे अपना एहसान चुकाएँ । इनकी हमदर्दी में यह बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है ।

दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही नींद नहीं आती, यदि थोड़ी-बहुत आ भी जाए तो मिलने वाले जगा देते हैं- खास कर वे लोग जो सिर्फ औपचारिकता निभाने आते हैं । इन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती, ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं। ऐसे में एक दिन मैंने तय किया कि आज कोई भी आए, मैं आँख नहीं खोलूँगा । चुपचाप पड़ा रहूँगा । ऑफिस के बड़े बाबू आए और मुझे सोया जानकर वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे कि यदि मैंने उन्हें नहीं देखा तो कैसे पता चलेगा कि वे मिलने आए थे । अतः उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया । फिर भी जब आँखें नहीं खुलीं तो उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया । मैंने दर्द के मारे कुछ चीखते हुए जब आँख खोली तो वे मुस्कराते हुए बोले- “कहिए, अब दर्द कैसा है ?”

मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं । उस दिन जब सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी । आते ही उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए बच्चों से कहा- “ये देखो चाचा जी !” उनका अंदाज कुछ ऐसा था जैसे चिड़ियाघर दिखाते हुए बच्चों से कहा जाता है- “ये देखो बंदर ।”

बच्चे खेलने लगे । एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर । सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी । रप-रप की आवाज ने मेरा ध्यान बाँटाया । क्या देखता हूँ कि सोनाबाई का एक लड़का मेरी टाँग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर रहा है । मैं इसके पहले कि उसे मना करता, सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी । सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली- “भैया, पेड़े खिलाओ, दवा गिरना शुभ होता है । दवा गई समझो बीमारी गई ।” इसके दो घंटों बाद सोनाबाई गई, यह कहकर कि फिर आऊँगी । मैं भीतर तक काँप गया ।

कुछ लोग तो औपचारिकता निभाने की हद कर देते हैं, विशेष कर वे



सार्वजनिक अस्पताल में जाकर किसी मरीज से उसके अनुभव सुनिए और अपने शब्दों में सुनाइए ।



अस्पताल में लगे सूचना फलक/ विज्ञापनों को पढ़िए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए ।

रिश्तेदार जो दूसरे गाँवों से मिलने आते हैं। ऐसे में एक दिन एक टैक्सी कमरे के सामने आकर रुकी। उसमें से निकलकर एक आदमी आते ही मेरी छाती पर सिर रखकर औंधा पड़ रोने लगा और कहने लगा- “हाय, तुम्हें क्या हो गया ? कारवालों का सत्यानाश हो !” मैंने दिल में कहा कि मुझे जो हुआ सो हुआ, पर तू क्यों रोता है, तुझे क्या हुआ ? वह थोड़ी देर मेरी छाती में मुँह गड़ाए रोता रहा। फिर रोना कुछ कम हुआ। उसने मेरी छाती से गरदन हटाई और जब मुझसे आँख मिलाई, तो एकदम चुप हो गया। फिर धीरे-से हँसते हुए बोला- “माफ करना, मैं गलत कमरे में आ गया था। आजकल लोग ठीक से बताते भी तो नहीं। गुप्ता जी का कमरा शायद बगल में है। हैं-हैं-हैं ! अच्छा भाई, माफ करना।” कहकर वह चला गया। अब वही रोने की आवाज मुझे पड़ोस के कमरे से सुनाई पड़ी। मुझे उस आदमी से अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया क्योंकि इस प्रकार रोता देख पत्नी ने उसे मेरा रिश्तेदार या करीबी मित्र समझकर टैक्सीवाले को पैसे दे दिए थे।

हमदर्दी जताने वालों में वे लोग जरूर आएँगे, जिनकी हम सूरत भी नहीं देखना चाहते। हमारे शहर में एक कवि हैं, श्री लपकानंद। उनकी बेतुकी कविताओं से सारा शहर परेशान है। मैं अकसर उन्हें दूर से देखते ही भाग खड़ा होता हूँ। जानता हूँ जब भी मिलेंगे दस-बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे। एक दिन बगल में झोला दबाए आ पहुँचे। आते ही कहने लगे- “मैं तो पिछले चार-पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में अति व्यस्त था। सच कहता हूँ कसम से, मैं आपके बारे में ही सोचता रहा। रात भर मुझे नींद नहीं आई और हाँ, रात को इसी संदर्भ में यह कविता बनाई...।” यह कह झोले में से डायरी निकाली और लगे सुनाने-

“असम की राजधानी है शिलाँग

मेरे दोस्त की टूट गई है टाँग

मोटरवाले, तेरी ही साइड थी राँग।”

कविता सुनाकर वे मुझे ऐसे देख रहे थे, मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो- ‘कहो, कविता कैसी रही ?’ और दूसरी आँख पूछ रही हो- ‘बोल, बेटा ! अब भी मुझसे भागेगा ?’ मैंने जल्दी से चाय पिलाई और फिर कविताएँ सुनने का वादा कर बड़ी मुश्किल से विदा किया।

अब मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हे ईश्वर ! अगर तुझे मेरी दूसरी टाँग भी तोड़नी हो तो जरूर तोड़ मगर कृपा कर उस जगह तोड़ना जहाँ मेरा कोई भी परिचित न हो, क्योंकि बड़े बेदर्द होते हैं ये हमदर्दी जताने वाले।

(‘हँसीघर के आईने’ से)

— o —



‘रक्त बैंक’ के कार्य तथा रक्तदान कार्यक्रम के बारे में जानकारी इकट्ठा करके अपनी कॉपी में लिखिए।



किसी सार्वजनिक या ग्राम पंचायत की सभा में ‘अंगदान’ के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।



## शब्द संसार

फिक्र स्त्री.सं.(अ.) = चिंता  
 हमदर्दी स्त्री.सं.(फा.) = सहानुभूति  
 एहसान पुं.सं.(अ.) = कृतज्ञता  
 औंधा वि.(हिं.) = उल्टा

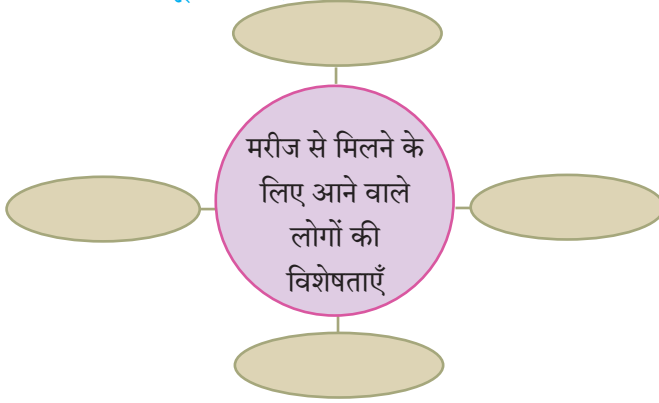
## मुहावरे

टाँग अड़ाना = बाधा डालना  
 काँप उठना = भयभीत होना

## स्वाध्याय

\* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

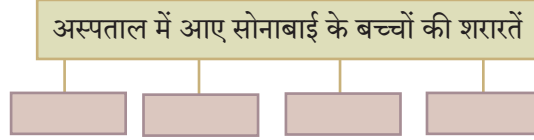
(१) संजाल पूर्ण कीजिए :



(२) अंतर स्पष्ट कीजिए :

प्राइवेट अस्पताल	सार्वजनिक अस्पताल
१. -----	१. -----
प्राइवेट वार्ड	जनरल वार्ड
१. -----	१. -----

(३) आकृति में लिखिए :



(४) कारण लिखिए :

- लेखक को अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया -----
- लेखक कहते हैं कि मेरी दूसरी टाँग उस जगह तोड़ना जहाँ कोई परिचित न हो -----

(५) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

- वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रखे जाते हैं - -----
- जहाँ मुफ्त में भोजन मिलता है - -----

(६) शब्द बनाइए :



## अभिव्यक्ति

मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए, लिखिए ।

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए :

१. सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई । .....
२. गाय बहुत दूध देती है । .....
३. मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । .....
४. सैनिकों की टुकड़ी आगे बढ़ी । .....
५. सोना-चाँदी और भी महँगे होते जा रहे हैं । .....
६. गोवा देख मैं तरंगायित हो उठा । .....
७. युवकों का दल बचाव कार्य में लगा था । .....
८. आपने विदेश में भ्रमण तो कर लिया है । .....
९. इस कहानी में भारतीय समाज का चित्रण मिलता है । .....
१०. सागर का जल खारा होता है । .....

(२) पाठ में प्रयुक्त किन्हीं पाँच संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामों का प्रयोग कीजिए :

१. ----- सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं ।
२. ----- बाजार जाओ ।
३. ----- कारखाने में एक ही विभाग में काम करते थे ।
४. इसे लेकर ----- क्या करोगे ?
५. हृदय ----- है; ----- उदार हो ।
६. लोग ----- कमरा स्वच्छ कर रहे हैं ।
७. ----- रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया है ।
८. इसके बाद ----- लोग दिन भर पणजी देखते रहे ।
९. ----- इसके पहले उसे मना करता ।
१०. काम करने के लिए कहा है ----- करो ।



(४) पाठ में प्रयुक्त सर्वनाम ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।



निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर किसी समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए :

- |          |               |                |
|----------|---------------|----------------|
| * स्थान  | * तिथि और समय | * प्रमुख अतिथि |
| * समारोह | * अतिथि संदेश | * समापन        |